तुलसी रामायण
श्रीरामचरितमानस
बालकाण्ड: आदिखण्ड–१

वैष्णवानां यथा शम्भुः

ŚB 12.13.16

Lord Śambhu [Śiva] the greatest of Vaiṣṇavas

वैष्णवानाम् यथा रुद्रो

स्कन्दपुराणम २.१.१७.१५

Rudra is the greatest among vaishnavas

वैष्णवानाम् परं श्रेष्ठः

पद्मपुराणम ६.७२.५१

Shiva is the greatest among vaishnavas

वैष्णवानाम् यथा शिवः

ब्रह्मवैवर्तपुराण ३.४४.७४

Shiva is the greatest among vaishnavas

वैष्णवानां च सिद्धानाम् ज्ञानिनां योगिनां शिवः।

ज्ञानामृतसार संहिता

Shiva is greatest among vaishnavas, siddhas, gyanis and yogis

Ram rahasya upanishad

ब्रह्मा संमोहनः शक्तिर्दक्षिणामूर्तिरेव च ।

अगस्त्यश्च शिवः प्रोक्ता मुनयोऽक्रमादिमे ॥ २०॥

छन्दो गायत्रसंज्ञं च श्रीरामश्चैव देवता ।

अथवा कामबीजादेर्विश्वामित्रो मुनिर्मनोः ॥ २१॥

And

ऋषिः सदाशिवः प्रोक्तो गायत्रं छन्द उच्यते ।

शिवोमारामचन्द्रोऽत्र देवता परिकीर्तितः ॥ ३१॥

Sadashiv is Rishi of ram mantra raj

Padmapuran

मया पुरा श्रुतं देव ऋषिभिर्बहुधोदितम् ।

रघुनाथपदस्मारी नित्यं रुद्रः पिनाकभृत् ॥ ३ ॥

(Sri Padma Puran Patal Khand Chapter 44 Verse 3)

Formerly I heard it said variously by Gods and sages that Sri Rudra, the Pinaka holder, always remembers Lord Rāma’s feet.

पहले मैंने देवताओं और ऋषियों से अनेक प्रकार से यह कहते सुना था कि पिनाकधारी श्री रुद्र सदैव भगवान राम के चरणों का स्मरण करते हैं।

सदाशिवोयमाराध्यः परं स्थानमागतः।

स रामो मन्मनस्त्यक्त्वा न क्वापि परिगच्छति।।

Padmapuran 5.42.18

सदाशिव जिनकी आराधना करके सर्वोत्कृष्ट स्थान को प्राप्त हुए वे रघुनंदन जु है।

Sadashiv, by worshipping whom, attained the highest position, is Raghunandan Ji.

एतत्ते सर्वमाख्यातं प्रसंगात्पार्थिवोत्तम ।

भृगुशापान्महेशस्य योनिलिङ्गस्वरूपता ।

रामस्य हस्तकमलस्पर्शनाद्वै नृपोत्तम ॥११४।

भविष्यत्यमलं तच्च रूपं लोकविगर्हितम् ।

राघवः सर्वदेवानां पावनः पुरुषोत्तमः ॥११५।

स्पृष्टा दृष्टाश्च तेनैव विमलाः शंकरादयः ।

सर्वेषामपि देवानां पिता माता जनार्दनः ॥११६।

त्राता च सर्वलोकानां वात्सल्यगुणसागरः ।

तमेव शरणं गच्छ यदीच्छेत्परमं पदम् ॥११७।

(Sri Padma Purana Uttarakhanda Chapter 255 Shloka: 114-117)

Sage Vasiṣṭha said:— O best king, I have told all this to you as the occasion has arisen. Due to the curse of sage Bhrigu, Lord Shiva took the form of a linga. O best of kings, by merely touch of the lotus hand of Lord Rama the entire form of Linga which is condemned by the world will be spotless. As Sri Raghava is the purifier of all the Gods and the Supreme Purusha (Purushottama). After being touched or even seen by him (Lord Rama),

even impure beings like Shiva and others became pure. Sri Janardhan Raghunandan, is the father, the mother of all the Gods. He is the savior of all the worlds and an ocean of parental affection. O king! Take refuge in Him alone if you desire the Supreme Goal.

वसिष्ठ मुनि ने कहाः हे राजन! मैंने अवसर आने पर ही यह सब तुमसे कहा है। भृगु मुनि के शाप के कारण भगवान शिव ने लिंग का रूप धारण किया था। हे राजन! भगवान राम के करकमलों के स्पर्श मात्र से ही संसार द्वारा निन्दित सम्पूर्ण लिंग निष्कलंक हो जाएगा। श्री राघव सभी देवताओं को पवित्र करने वाले तथा परम पुरुषोत्तम हैं। उनके (भगवान राम के) स्पर्श या दर्शन से शिव आदि अपवित्र प्राणी भी पवित्र हो गए। श्री जनार्दन रघुनन्दन सभी देवताओं के पिता और माता हैं। वे समस्त लोकों के रक्षक और माता-पिता के स्नेह के सागर हैं। हे राजन! यदि तुम परमगति चाहते हो तो उन्हीं की शरण में जाओ।

Skandpuran

तवांशोऽहं हरिर्ब्रह्मा सर्वे देवाश्चराचराः ।

जगत्पूज्यो ह्यहं तस्मादुमया सह चानया ॥

आवां राम जगत्पूज्यावावयोश्च युवां सदा ।
त्वन्नामजापिनी गौरी त्वन्मन्त्रजपवानहम् ॥
मुमूर्षोर्मणिकर्णे तदर्द्धोदकनिवासिनः ।
अहं दिशामि ते मन्त्रं तारकं ब्रह्मवाचकम् ॥
श्रीराम राम रामेति ह्येतत्तारकमुच्यते ।
अतस्त्वं जानकीनाथ परं ब्रह्मासि निश्चितम् ॥
त्वन्मायामोहिताः सर्वे न त्वां जानन्ति तत्त्वतः ।
त्वद्भक्त्यैव विजानन्ति ब्रह्मैकं त्वामखण्डितम् ॥
विश्वरूपस्य ते राम विश्वेशब्दा हि वाचकाः ।
तथापि मूलमन्त्रस्ते विश्वेषां बीजमक्षयम् ॥

(Sri Skand Puran Nirvaan Khand Chapter 32 Verse 80-85)

Lord Sri Shiva Says to Sri Rama:—

O Rama! I (Shiva), Brahma, Vishnu, all the gods, the whole universe all are your parts. That is why I have become world worshipped with this Uma (Maa Parvati). Sri Rama! We both (Gauri-Shankar) are worshiped by the

world and you both (Sita-Ram) are worshiped by both of us. Gauri always chants your name and I am the too chanter of your mantra. When the creature resides In half-water in Manikarnika-tirtha, I preach your mantra called Taraka-Brahmana for that dying person. 'Shri Ram Ram Ram' – this is called the Tarak Mantra. O Janakinath! Absolutely you are the Par-Brahman . All beings are being deluded by Your illusion, that is why they cannot know You in essence. You are the unique unbroken Brahman, You can only be known by Your devotion, Sri Rama, although the world is Your form and all words signify You, yet Your basic mantra is the indestructible seed of all.

भगवान श्री शिव श्री राम से कहते हैं:—

हे राम! मैं (शिव), ब्रह्मा, विष्णु, सभी देवता, संपूर्ण ब्रह्मांड आपके ही अंश हैं। इसीलिए मैं इस उमा (माँ पार्वती) के साथ जगत् पूज्य हुआ हूँ। श्री राम! हम दोनों (गौरी-शंकर) जगत द्वारा पूजित हैं और आप दोनों (सीता-राम) हम दोनों द्वारा पूजित हैं। गौरी सदैव आपका नाम जपती हैं और मैं भी आपके मंत्र का जाप करने वाला हूँ। जब प्राणी मणिकर्णिका-तीर्थ में अर्धजल में रहता है, तब मैं उस मरते हुए व्यक्ति को आपके तारक-ब्रह्म नामक मंत्र का उपदेश करता हूँ। 'श्री राम राम राम' – इसे

तारक मंत्र कहते हैं। हे जानकीनाथ! निस्संदेह आप ही पर-ब्रह्म हैं। आपकी माया से सभी प्राणी मोहित हो रहे हैं, इसीलिए वे आपको तत्व से नहीं जान पाते। हे श्री राम, आप अद्वितीय अखंड ब्रह्म हैं, आपको केवल आपकी भक्ति से ही जाना जा सकता है, यद्यपि यह जगत आपका ही स्वरूप है और सभी शब्द आपके ही प्रतीक हैं, तथापि आपका मूल मंत्र उन सबका अविनाशी बीज है।

वन्देऽहम् रामचन्द्रस्य पादौ प्रणतरक्षकौ।

सीतायाश्च पुनः पादौ सिद्धिविधयकौ।।

रुद्रयामल तंत्र

रुद्र कहते हैं;:- मै रघुनंदन जी के चरणकमल की वन्दना करता है जो अपने शरणागत भक्तों की रक्षा करते हैं तथा पुनः मैं जनकनन्दिनी जी के चरणकमलों की आराधना करता हूं जो समस्त सिद्धियां को प्रदान करने

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः ॥

सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालु नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥

शिव रहस्य

Shiva says:- Rama is my Mother and Rama (Ramachandra) is my Father,Rama is my Lord and Ram(Ramachandra) is my Friend, O the Compassionate Ram (Ramachandra) is my All in All,I do not know any other; I do not know any other; Indeed I do not know any other

शिव कहते हैं: - राम मेरी माता हैं और राम (रामचंद्र) मेरे पिता हैं, राम मेरे भगवान हैं और राम (रामचंद्र) मेरे मित्र हैं, हे दयालु राम (रामचंद्र) मेरे सर्वस्व हैं, मैं किसी अन्य को नहीं जानता; मैं किसी अन्य को नहीं जानता; वास्तव में मैं किसी अन्य को नहीं जानता।

हे सीताराम महाबाहो सीतया रम्या सह।
मम् हृत्कमले वासं कुरु दासोऽस्मि ते सदा।।

सत्योपाख्यान रामायण

Shiva says:- O great armed Shri Ram who roams with Sita ji. Please reside in my lotus heart as I m your servant.

शिव कहते हैं:- हे महाबाहु श्री राम, जो सीता जी के साथ विचरण करते हैं। कृपया मेरे हृदय कमल में निवास करें क्योंकि मैं आपका सेवक हूँ।

नमः श्रीरामभक्ताय नमः श्रीरामदायिने।

नमस्ते घोररुपाय अघोराय दयावते।।

आदि रामायण

श्रीरामभक्त शिवजी को नमस्कार है, रामभक्तों को श्रीराम से मिलाने वाले शिवजी को नमस्कार है। भयानक स्वरुप वाले तथा दयावान आशुतोष स्वरुप शिवजी को नमस्कार है।

Salutations to Lord Shiva, the devotee of Shri Ram. Salutations to Lord Shiva who unites the devotees of Lord Ram with Lord Ram. Salutations to Lord Shiva who has a terrifying form and is the compassionate Ashutosh.

सदाशिव उवाच

मम इष्टदेवो श्रीरामो विभुतिद्वय नायकः।

सर्वेश्वेरेश्वरस्साक्षात् परात्परम् प्रभुः।।

कौन्डिनय संहिता

सदाशिव स्वयं कहते हैं:- मेरे इष्टदेव एकपाद तथा त्रिपाद विभुति नायक श्रीराम हैं जो सर्वेश्वरेश्वर तथा साक्षात् पर से परे भगवान हैं।

Sadashiv himself says :- My favorite deity is Shri Ram who is the lord of both one-footed and three-footed Vibhuti and is the God who is beyond all.

रामाद् अन्यं न संवेद्यि परं देवम् सद् ईश्वरम्।।

सदाशिव संहिता

सदाशिव कहते हैं:- मैं श्रीराम के अलावा किसी को भी सर्वोच्च भगवान नहीं मानता।

Sadashiv says:- I do not consider anyone other than Shri Ram as Supreme God.

रामाद् अन्यं परं श्रेष्ठं यो वै पाण्डित्यमात्रतः।
संतप्तहृदयस्तस्य जिह्वां छिन्द्याम् अहम् मुने।।
नारद पंचरात्र अन्तर्गत शिव संहिता

शिव जी कहते हैं:- जो कोई श्रीराम के अलावा किसी अन्य को श्रेष्ठतम् कहता है, उससे मेरा मन संतप्त होकर उसके जिह्वा का उच्छेदन करने में उद्यत रहता हूं।

Lord Shiv says:- Whoever calls anyone other than Lord Ram as the supreme, my mind gets upset at him and I am ready to cut off his tongue.